PAPER-III
SANSKRIT TRADITIONAL SUBJECT

Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) ___________________________
   (Name) ______________________________
2. (Signature) ___________________________
   (Name) ______________________________

Roll No. | | | | | | | | |

(In figures as per admission card)

Roll No.____________________________________

(In words)

J 7 3 1 1

Time : 2 $^1/_2$ hours] [Maximum Marks : **200**

Number of Pages in this Booklet : **40** Number of Questions in this Booklet : **19**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your Name, Roll Number, Phone Number or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, or use abusive language or employ any other unfair means, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।

   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे, जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात् किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर नियत स्थान के अलावा अपना नाम, रोल नम्बर, फोन नम्बर या कोई भी ऐसा चिह्न जिससे आपकी पहचान हो सके, अंकित करते हैं अथवा अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं, या कोई अन्य अनुचित साधन का प्रयोग करते हैं, तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित किये जा सकते हैं ।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
8. **केवल नीले/काले बाल प्वाईंट पेन का ही इस्तेमाल करें ।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (केलकुलेटर) या लॉग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।**

संस्कृत परम्परागत विषयः
SANSKRIT TRADITIONAL SUBJECT

प्रश्नपत्रम् – III

प्रश्नपत्र – III

PAPER – III

टिप्पणी : अस्य प्रश्नपत्रस्य **शतद्वयम् (200)** अङ्काः सन्ति, एवम् अस्मिन् **चत्वारि** खण्डानि सन्ति । अभ्यर्थिभिः एषु समाहितानां प्रश्नानामुत्तरं पृथग्विहितविस्तृतनिर्देशानुसारं देयम् ।

नोट : यह प्रश्नपत्र **दो सौ (200)** अंकों का है एवं इसमें **चार (4)** खण्ड हैं । अभ्यर्थियों को इनमें समाहित प्रश्नों के उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है ।

Note : This paper is of **two hundred (200)** marks containing **four (4)** sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

खण्डम् – I
खण्ड – I
SECTION – I

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे **विंशत्यङ्कात्मकौ** निबन्धश्रेणीकौ प्रश्नौ स्त:, ययो: उत्तरं प्राय: **पञ्चशतमितै: (500)** शब्दैरपेक्ष्यते । **(2 × 20 = 40 अङ्का:)**

नोट : इस खंड में **बीस-बीस** अंकों के दो निबन्धात्मक प्रश्न हैं । प्रत्येक का उत्तर लगभग **पाँच सौ (500)** शब्दों में अपेक्षित है । **(2 × 20 = 40 अंक)**

Note : This section consists of two essay type questions of **twenty (20)** marks each, to be answered in about **five hundred (500)** words each. **(2 × 20 = 40 marks)**

1. संस्कृतभाषया कमप्येकं विषयमधिकृत्य
   निबन्धो लेखनीय: _________
   (क) आतङ्कवाद:
   (ख) शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्
   (ग) वृक्षो रक्षति रक्षित:

2. संस्कृतभाषया कमप्येकं विषयमाश्रित्य

निबन्धो लेखनीय: __________

(क) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते......

(ख) आ नो भद्रा: ऋतवो यन्तु विश्वत:

(ग) वसुधैव कुटुम्बकम्

खण्डम् – II
खण्ड – II
SECTION – II

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे प्रत्येकम् ऐच्छिकवर्ग: / विशेषज्ञता-नुसारं **त्रय: (3)** प्रश्ना: सन्ति । अभ्यर्थिना केवलमेकमेव ऐच्छिकवर्गं / विशेषज्ञताम् आश्रित्य तस्मादेव त्रय: प्रश्ना: समाधेया: । प्रत्येकं प्रश्न: **पञ्चदशाङ्कात्मक: (15)** अस्ति । तदुत्तरं प्राय: **शतत्रयशब्दै: (300)** अपेक्ष्यते ।

(3 × 15 = 45 अङ्का:)

नोट : इस खण्ड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता से **तीन (3)** प्रश्न हैं । अभ्यर्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता को चुनकर उसी के तीनों प्रश्नों के उत्तर देना है । प्रत्येक प्रश्न **पन्द्रह (15)** अंकों का है व उसका उत्तर लगभग **तीन सौ (300)** शब्दों में अपेक्षित है ।

(3 × 15 = 45 अंक)

Note : This section contains **three (3)** questions from each of the electives/specializations. The candidate has to choose only one elective/specialization and answer all the three questions from it. Each question carries **fifteen (15)** marks and is to be answered in about **three hundred (300)** words.

(3 × 15 = 45 marks)

I. फलितज्यौतिषम्

3. वरकन्ययो: नक्षत्र-ग्रहमेलापकञ्च लिखत ।

   वरकन्या का नक्षत्र एवं ग्रह मेलापक लिखिये ।

   Write the नक्षत्र-ग्रहमेलापक of वरकन्या ।

4. व्याख्यायताम्

   व्याख्या कीजिये

   Explain –

'सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहा: शुभफलप्रदा:'

5. भयात्-भभोगयो: साधनं सोदाहरणं प्रतिपादनीयम् ।
भयात् एवं भभोग का साधन उदाहरण सहित कीजिये ।
Derive भयात् and भभोग with the example.

II. सिद्धान्तज्यौतिषम्

3. 'कल्पमानमेकसहस्रयुगमितं भवतीति' निरुप्यताम् ।
'कल्पमान एक सहस्र महायुग का होता है' निरूपण कीजिये ।
'कल्पमानमेकसहस्रयुगमितं भवति' Explain.

4. व्याख्यायताम्
व्याख्या कीजिये
Explain
'असंक्रान्तिमासोऽधिमास: स्फुटंस्यात् ।'

5. त्रिप्रश्ना: के ? विविच्यताम् ।
'त्रिप्रश्न' का विवेचन कीजिये ।
Explain the 'त्रिप्रश्न'

III. व्याकरणम् ।

3. शब्दब्रह्मवाद: सम्यगुपपाद्यताम् ।
शब्दब्रह्मवाद का सम्यक् विवेचन कीजिए ।
Discuss शब्दब्रह्मवाद critically

4. व्याकरणाध्ययनस्य आनुषङ्गिक प्रयोजनानि विशदयत ।
व्याकरणाध्ययन के अनुषङ्गिकप्रयोजनों का विवेचन कीजिए ।
Explain the secondary purposes of the study of Vyakarana.

5. एतेषां रूपसिद्धि: कथं भवति ?
इनकी रूपसिद्धि कैसे होती है ?
How are the following derived ?
(1) पण्डितम्मन्य: ।
(2) विशालम् ।

(3) गङ्गेय: ।

IV. मीमांसा ।

3. 'वेद: अपौरुषेय:' सुस्पष्टं विवेचयन ।

'वेद: अपौरुषेय:' स्पष्ट कीजिए ।

Write a detailed note on 'वेद: अपौरुषेय:'.

4. विशिष्टविधि: क: ? सोदाहरणं विवृणुत ।

'विशिष्टविधि क्या है ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए । ' :

What is 'विशिष्टविधि' ? Explain with an example.

5. अपूर्वस्वीकारे मीमांसकानां युक्तिवाद: क: ? सोदाहरणं विवेचयत ।

मीमांसक 'अपूर्व' का स्वीकार क्यों करते हैं ? सोदाहरण विवेचन कीजिए ।

What are the grounds on the basis of which मीमांसकs accept Apūrva ? Explain with examples.

V. नव्यन्याय: ।

3. सामान्यपदार्थं सोदाहरणं विवृणुत ।

'सामान्य' पदार्थ का सोदाहरण विवेचन कीजिए ।

Discuss the entity 'सामान्य' with appropriate examples.

4. 'पदज्ञानं तु करणं द्वारं तत्र पदार्थधी:'

सोदाहरणं स्पष्टीकुरुत ।

'पदज्ञानं तु करणं ....'

सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

Explain with examples 'पदज्ञानं तु करणं ....':

5. न्यायमते मोक्षस्वरूपं कीदृशम् ? विवेचयत ।

न्यायमतानुसार मोक्षस्वरूप का विवेचन कीजिए ।

Discuss the state of salvation according to न्यायदर्शन.

VI. सांख्ययोगौ ।

3. सांख्याभिमतानि प्रमाणानि निरूपयत ।

सांख्याभिमत प्रमाणों का विचार कीजिए ।

Elucidate the means of knowledge accepted by the Sāṅkhyas.

4. सांख्याभिमतान् गुणान् विवृणुत ।

सांख्यभिमत गुणों का विवरण कीजिए ।

Explain the गुणs accepted by the Sāṅkhyas.

5. योगदर्शनानुसारेण संप्रज्ञातसमाधिं विवृणुत ।

योगदर्शन के अनुसार संप्रज्ञातसमाधि का विवरण कीजिए ।

Explain संप्रज्ञातसमाधि according to Yogadarshana.

VII. तुलनात्मक दर्शनम् ।

3. परिणामवादविवर्तवादयो: तुलनां कुरुत ।

परिणामवाद और विवर्तवाद की तुलना कीजिए ।

Compare and Contrast परिणामवाद and विवर्तवाद.

4. नास्तिकवादास्तिकवादयो: तुलनां कुरुत ।

नास्तिकवाद और आस्तिकवाद की तुलना कीजिए ।

Compare and contrast नास्तिकवाद and आस्तिकवाद.

5. ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्येति केषां मतम् ? उपपादयत

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या - यह मत किसका है ? विशद कीजिए

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या - who upholds this view ? Explain.

VIII.शुक्लयजुर्वेद: ।

3. वेदभाष्यक्षेत्रे आचार्य सायणस्य योगदानं समीक्षत ।

वेदभाष्य के क्षेत्र में आचार्य सायण के योगदान की समीक्षा कीजिए ।

Elucidate the contribution of Acharya Sayan in "वेदभाष्यक्षेत्रे"

4. पुरुष-सूक्तस्य विषयवस्तु विवेचयत ।

पुरुषसूक्त की विषयवस्तु की विवेचना कीजिए । Explain the subject-matter of Purusha Sukta.

5. वेदकालनिर्धारणे भारतीय-पाश्चात्यविदुषां मतानि वर्णयत ।

वेदकाल के निर्धारण में भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के मतों का विवेचन कीजिए ।

Describe the age of Vedas according to Indian and Western scholars.

IX. माध्ववेदान्त: ।

3. “तत्त्वमसि” इति श्रुतितात्पर्यं विवेचयत ।

“तत्त्वमसि” - इस श्रुति के तात्पर्य का विवेचन कीजिए ।

Examine the purport of the Śruti text – “तत्त्वमसि”.

4. विष्णो: सर्वोत्तमत्वं प्रतिपादयत ।

“विष्णु के सर्वोत्तमत्त्व” का प्रतिपादन कीजिए ।

Explain the theory of supremacy of Lord Vishnu.

5. “मुक्ति: नैजसुखानुभूति:” – विमृशत ।

“मुक्ति निजसुखानुभूति, है” – विमर्श कीजिए ।

Write critically – “मुक्ति: नैजसुखानुभूति:”

X. धर्मशास्त्रम् ।

3. ज्ञानकृतब्रह्मवधप्रायश्चितं लिखत ।

ज्ञानकृतब्रह्मवध का प्रायश्चित लिखिए ।

Write about प्रायश्चित to be performed on killing a Brāmhaṇa knowingly.

4. को नाम धर्म: ? किं स्वरूपञ्च तस्य इति विवेचयत ।

धर्म किसे कहते हैं ? धर्म का स्वरूप क्या है ? विचार कीजिए ।

What is धर्म ? Describe its Nature in details.

5. विवाहभेदान् विवृणुत ।

विवाहभेदों का वर्णन कीजिए ।

Describe the different types of विवाहs.

XI. साहित्यम् ।

3. ‘काव्यस्यात्मा ध्वनि:’ – समर्थयत ।

'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' – - समर्थन कीजिए ।

'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' – Justify

4. सप्रभेदं सोदाहरणं रीतिं लक्षयत ।

रीति का लक्षण देकर उसके भेदों का सोदाहरण विवरण कीजिए ।

Define रीति and explain its types with examples.

5. 'शान्तोऽपि नवमो रसः' – व्याख्यात ।

'शान्तोऽपि नवमो रसः' – व्याख्या कीजिए ।

'शान्तोऽपि नवमो रसः' – Comment

XII. पुराणेतिहासौ ।

3. पुराणलक्षणं निरूप्य श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य विशेषान् विवृणुत ।

पुराण का लक्षण निरूपण कर श्रीमद्भागवतमहापुराण के विषय में बताइए ।

Mention the definition of पुराण and Describe the characteristic features of श्रीमद्भागवतमहापुराण.

4. महाभारतकालीनसमाजे नारीणां स्थानं विवृणुत ।

महाभारतकालीन समाज में नारी के स्थान का विचार कीजिए ।

Describe the position of women in the age of the महाभारत.

5. गृहस्थानां कर्तव्यानि प्रतिपादयत ।

गृहस्थों के कर्तव्यों का प्रतिपादन कीजिए ।

Describe the duties of गृहस्थs.

XIII. आगमः ।

3. तन्त्रशास्त्रस्य महत्वं निरूप्यताम् ।

तन्त्र शास्त्र के महत्व का निरूपण कीजिए ।

Describe the importance of तन्त्रशास्त्र.

4. शैवागमस्य किं स्थानमस्ति ? चर्चा कुरुत ।

शैवागम का क्या स्थान है ? चर्चा करें ।

Discuss the place of शैवागम among the agamas.

5. वैष्णवतन्त्रेषु पाञ्चरात्रविधिं वर्णयत ।

वैष्णवतन्त्र में पाञ्चरात्र विधि का वर्णन करें ।

Describe the पाञ्चरात्र विधिः of वैष्णवतंत्र.

XIV. अद्वैतवेदान्तः ।

3. तत्त्वमसीतियहावाक्यस्य अखण्डार्थत्वं बोधयत ।

'तत्त्वमसि' इस वाक्य का अखण्डार्थ बतलाइए ।

Explain the अखण्डार्थ of the Mahavakya 'तत्त्वमसि'.

4. अद्वैतमतानुसारेण मुक्तिः कतिविधाः ? विशदयत ।

अद्वैतमतानुसार मुक्ति कितने प्रकार की होती है ?

How many types of Mukti are found in Advaita Vedanta ? Elucidate.

5. शाङ्करमतानुसारेण अज्ञानस्य शक्तिद्वंय विवृणुत ।

शाङ्करमतानुसार अज्ञान के शक्तिद्वय का विवरण कीजिए ।

Describe the two kinds of शक्ति of अज्ञान according to Sánkara.

खण्डम् – III
खण्ड – III
SECTION – III

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे **दशाङ्कात्मकाः (10) नव (9)** प्रश्नाः सन्ति । प्रत्येकं प्रश्नस्य उत्तरं प्रायः **पञ्चाशत् (50)** शब्दैरपेक्ष्यते । **(9 × 10 = 90 अङ्काः)**

नोट : इस खंड में **दस-दस (10-10)** अंकों के **नौ (9)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पचास (50)** शब्दों में अपेक्षित है । **(9 × 10 = 90 अंक)**

Note : This section contains **nine (9)** questions of **ten (10)** marks, each to be answered in about **fifty (50)** words. **(9 × 10 = 90 marks)**

6. चूडाकरणमुहूर्त्तः विवेचनीयः ।
   चूडाकरणमुहूर्त्त का विवेचन कीजिये ।
   Discuss the चूडाकरण मुहूर्त्त ।

7. देवासुराणामहोरामव्यवस्था प्रतिपादनीया

देवताओं और असुरों की अहो रात्र व्यवस्था का प्रतिपादन कीजिये ।

Explainअहो रात्र व्यवस्था of देवासुर.

8. ‘पूर्वत्रासिद्धम्’ इति सूत्रं सोदाहरणं व्याख्यात ।

‘पूर्वत्रासिद्धम्’ इस सूत्र का सोदाहरण विवरण कीजिए ।

Explain the Sūtra पूर्वत्रासिद्धम् with illustration.

9. धर्मशास्त्रानुसारं स्नातकभेदान् विवेचयत

धर्मशास्त्र के अनुसार स्नातकों के भेद स्पष्ट कीजिए

Explain and elaborate upon the type of स्नातक as per Dharmashastra.

10. 'शरीरस्य न चैतन्यं मृतेषु व्यभिचारत:' संक्षेपेण विवृणुत ।

'शरीरस्य न चैतन्यं मृतेषु व्यभिचारत:' संक्षेप में व्याख्या कीजिए ।

'शरीरस्य न चैतन्यं मृतेषु व्यभिचारत:' Explain in brief.

11. अलङ्काराणां उत्पत्तिविकासौ विशदयत ।

अलङ्कारों की उत्पत्ति और विकास का विवरण दीजिए ।

Explain the origin and development of अलङ्कारs.

12. “अहं ब्रह्मास्मि” इति श्रुतिवाक्यस्य तात्पर्यं माध्वमतानुसारेण निरूपयत ।

“अहं ब्रह्मास्मि” इस श्रुतिवाक्य के तात्पर्य को माध्वमतानुसार निरूपित कीजिए ।

Elucidate the purport of the Śruti-text “अहं ब्रह्मास्मि” according to Mādhva Vedānta.

13. ब्रह्म जगत: उपादानकारणं मित्तकारणं चेति स्थापयत

ब्रह्म जगत का उपादानकारण और निमित्तकारण है । यह स्थापित कीजिए ।

Establish that Brahman is the material cause and efficient cause of the world.

14. शैवाभिमतं मोक्षस्वरूपं निरूपयत ।

शैवमत के अनुसार मोक्षस्वरूप का निरूपण करें ।

Bring out the Nature of मोक्ष according to शैव.

खण्डम् – IV
खण्ड – IV
SECTION – IV

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे निम्नाङ्किकतानुच्छेदमाश्रित्य **पञ्च (5)** प्रश्नाः सन्ति । प्रत्येकं प्रश्नस्योत्तरं प्रायः **त्रिंशत् (30)** शब्दैरपेक्ष्यते । प्रत्येकं प्रश्नः **पञ्चाङ्ककः** अस्ति । **(5 × 5 = 25 अङ्काः)**

नोट : इस खंड में निम्नलिखित परिच्छेद पर आधारित **पाँच (5)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस (30)** शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच (5)** अंकों का है । **(5 × 5 = 25 अंक)**

Note : This section contains **five (5)** questions of **five (5)** marks each based on the following passage. Each question should be answered in about **thirty (30)** words.

(5 × 5 = 25 marks)

अस्ति कस्मिंश्चित् जलाशये कम्बुग्रीवो नाम कच्छपः । तस्य च संकटविकटनाम्नी मित्रे हंसजातीये परमस्नेहमाश्रिते नित्यमेव सरस्तीरमासाद्य तेन सह अनेकदेवर्षिमहर्षीणां कथाः कृत्वास्तमयवेलायां स्वनीडासंश्रयं कुरुतः । अथ गच्छता कालेन अनावृष्टिवशात् सरः शनैः शनैः शोषमगमत् । ततः तद्दुःखदुःखितौ तावूचतुः - 'भो मित्र, कर्दमावशिष्टं एतत्सरः सञ्जातम् । तत्कथं भवान् भविष्यतीति व्याकुलत्वं नो हृदि वर्तते' । तच्छ्रुत्वा कम्बुग्रीव आह – 'भोः साम्प्रतं नास्त्यस्माकं जीवितव्यं जलाभावात् । तथापि उपायश्चिन्त्यताम्' इति । अनन्तरं स आह – 'आनीयतां काचित् दृढरज्जुः लघुकाष्ठं वा । अन्विष्यतां च प्रभूतजलसनाथं सरः येन मया मध्यप्रदेशे दन्तैर्गृहीते सति

युवां कोटिभागयोः तत्काष्ठं मया सहितं संगृह्य तत्सरो नयथ '। तावूचतुः - भो मित्र एवं करिष्यावः । परं भवता मौनव्रतेन स्थातव्यम् । नो चेत् तव काष्ठात् पातो भविष्यति । तथानुष्ठिते गच्छता कम्बुग्रीवेण अधोभागव्यवस्थितं किञ्चित् पुरमालोकितम् ।

तत्र ये पौराः ते तथा नीयमानं विलोक्य सविस्मयमिदमूचुः – "अहो चक्राकारं किमपि पक्षिभ्यां नीयते । पश्यत पश्यत !" अथ तेषां कोलाहलमाकर्ण्य कम्बुग्रीव 'भोः, किमेषः कोलाहलः' इति वक्तुमना अर्धोक्ते पतितः, पौरैः खण्डशः कृतश्च । अतःसत्यमिदमुक्तं 'सुहृदां हितकामानां वचः यः न श्रुणोति सः विनश्यति' ।

15. कम्बुग्रीवस्य के मित्रे ? ताभ्यां सह सः कथं कालयापनं करोति स्म ?

16. गच्छता कालेन किमभवत् ?

17. कम्बुग्रीवस्य मित्रे तं प्रति किमूचतुः ?

18. नीयमानं कम्बुग्रीवं विलोक्य पौराः किमूचुः ?

19. अस्याः कथायाः तात्पर्यं किम् ?

Space For Rough Work

FOR OFFICE USE ONLY	
Marks Obtained	
Question Number	Marks Obtained
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	

Total Marks Obtained (in words) ....

(in figures) ....

Signature & Name of the Coordinator ....

(Evaluation) Date ....